श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यगज्ञान अभ्यासक्रम

मास्टर ऑफ जैनिज्म् प्रथम वर्ष - १

प्रश्न - पत्र

जून - २०१९
गुणांक - ५०

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है। ५. गलत एनरोलमेन्ट नंबर तथा नहीं समझे ऐसे एनरोलमेन्ट नंबर के १० अंक कम कर लिये जायेंगे। ६. समय पर ता. २५ ओक्टोबर तक पेपर नही मिले तो दूसरे १० अंक कम किये जायेंगे। ७. निबंध के मार्की प्रेस पद्धति से लिये जायेंगे। ८. जवाब पत्र, निबंध में नाम, एनरोलमेन्ट नंबर, वर्ष और सत्र लिखना जरूरी है। ९. जवाब तत्वार्थ सूत्र की प्रस्तावना व प्रथम दो अध्याय (पृष्ठ १ से [illegible]) में से ही लिखना है।

प्रश्न नं. १ योग्य विकल्प ढूंढकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो २५

१. उपयोग ही.................. होने से अपना और अन्य पर्यायों का ज्ञान कराता है।
२. कुछ मनुष्य और कुछ तिर्यंच औपपातिक और.................निरुपक्रम और अनपवर्तनीय आयुवाले ही होते हैं।
३. आत्मा के साथ प्रवाहरुप से..................शरीर का सम्बन्ध अनादि है।
४. साँख्य और वेदान्त दर्शन आत्मा को.................. मानते है।
५. कान भी................ के ध्वनि रुप पर्याय को ही ग्रहण करता है।
६. चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को हजारों वर्ष पूर्व के महावीर के जन्मदिन के रुप में मानना यह एक............... है।
७. निर्वृति इन्द्रिय की बाहरी और भीतरी पौद्‌गलिक शक्ति को .... कहते हैं।
८. पुद्‌गलों में अनेक प्रकार के .... की शक्ति होती है।
९. नेत्र और मन से होनेवाली ज्ञानधारा को................... कहा गया है।
१०. सम्यक्त्व और चारित्र ये दो ही पर्याय.................... भाववाले है।
११. सामान्य बोधक नाम से जब एकाध अर्थवस्तु ही विचार में ग्रहण की जाती है तब वह विचार............नैगम कहलाता है।
१२. योग ही .... के आकर्षण का कारण है।
१३. दान लाभ आदि लब्धियों का आविर्भाव...................... के क्षयोपशम से होता है।
१४. सुख दु''ख का अनुभव, शुभाशुभ कर्म का बन्ध आदि................... का उपभोग माना गया है।
१५. कार्मण योग से चंचल जीव भी.................. के समय कार्मण वर्गणा ओं को ग्रहण करता है।
१६. ....के समय होनेवाले संदेहयुक्त चारों ज्ञान अनिश्चितग्राही अवग्रह आदि कहलाते हैं।
१७. नैगम संग्रह तथा व्यवहार ये तीनों नय................ प्रकृतिवाले कहलाते हैं।
१८. इन्द्रियो से सिर्फ.................... पदार्थ ही जाने जा सकते हैं।
१९. सब संसारी जीवों के .... शरीर होते ही है।
२०. जो जीव प्रदेशों से अधिष्ठित हो वह....................... योनि है।
२१. तात्विक पक्षपात में बाधक रागद्वेष की तीव्रता..................... से मिट जाती है।
२२. एक जीव को लेकर सम्यग् दर्शन का विरहकाल उत्कृष्ट .... जितना समझना चाहिये।
२३. .... के अनुसार आत्मा निरन्वय परिणामों का प्रवाह मात्र है।
२४. देशविरती का आविर्भाव................ आदि अष्ठविध कषाय के क्षयोपशम् से होता है।
२५. कृष्ण, नील आदि छः लेश्यायें योगजनक....................के उदय का परिणाम है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो २५

१. सम्यगज्ञान पूर्वक काषायिक भाव और योग की निवृति से होने वाला स्वरुप रमण क्या है ?
२. ध्यान ही पराकाष्ठा के कारण आत्मा में किसके समान निश्रकम्पता व निश्चलता आती है ?
३. योनि आधार है तो जन्म क्या है ?
४. आहारक शरीर के आरम्भक स्कन्धो से किस शरीर के आरम्भक स्कंध असंख्यात गुण होते है ?
५. कौनसी आत्मा का संपूर्ण लौकिक ज्ञान भी आध्यात्मिक दृष्टि से अज्ञान कहा गया है ?
६. तीर्थकरों द्वारा प्रकाशित ज्ञान कौन ग्रहण करके सूत्रबद्ध करते हैं ?
७. त्रिविग्रह गति में जीव कितने समय के लिये अनाहारक माने गये हैं ?
८. कैसी आयुवाले प्राणियों को निमित्त मिलते ही अकाल में ही मर जाते हैं ?

९. अभव्यत्व यह कौन से भाव का भेद है ?
१०. निश्चय की पराकाष्टा किस नय में सिद्ध होती है ?
११. किस समय आत्मा में मति आदि ज्ञानशक्तियाँ नहीं रहती ?
१२. तत्व का अश्रध्दान किसके उदय से होता है ?
१३. जीव का क्रिया करने का साधन क्या है ?
१४. देव और नारकों के जन्म स्थान को क्या कहते है ?
१५. सब आत्माओं में पाया जाने वाला एक जीवत्वरुप पारिणामिक भाव ही है जिसका फलित अर्थ क्या है ?
१६. अतीत, वर्तमान तथा भावी इन त्रैकालिक विषयों में कौनसा ज्ञान प्रवृत होता है ?
१७. जीवत्व को छोडकर भावों के कितने भेद आत्मा के उपलक्षणही है ?
१८. किन दो ज्ञान का प्रतिपक्ष संभव नहीं ?
१९. मोहनीय कर्म के उदय के फल स्वरुप भाव वेद क्या है ?
२०. द्रव्य पुण्य का कारण शुभ अध्यवसाय क्या है ?
२१. पहले अनुभव की हुई और वर्तमान में अनुभव की जाने वाली वस्तु की एकता का तालमेल क्या है ?
२२. किस नय का विषय सामान्य न रहकर विशेष रुप से ही ध्यान में आता है ?
२३. मतिज्ञान आदि के कितने पर्याय क्षायोपशमिक हैं ?
२४. "कोदों" का उदा. किस भाव के लिये दिया गया है ?
२५. जिससे पूर्वजन्म का स्मरण तक हो सके - विचार की इतनी योग्यता क्या कहलाती है ?

प्रश्न नं. ३ विविध ग्रंथो की सहायता से तुम्हारे शब्दों में १४ से १५ पन्नो का महानिबंध लिखो (कोई भी एक)

१. **छः से आठ द्वार से सम्यग् दर्शन विचारणा** (सम्यग् दर्शन, स्वरुप, महत्व, प्रकार, छः द्वार से आठ द्वार से विचारणा)
२. **उपयोग की विविधता** (जीव का लक्षण, जीवतत्व स्वरुप, उपयोग याने क्या ? उसके प्रकार, उसकी विविधता)
३. **परलोक प्रवास** (परलोक-आलोक याने क्या? परलोक में कौनसा शरीर आत्मा के साथ जाता है ? शरीर के प्रकार, परलोक में जाने की दो रीत, आयुष्य कर्म, विग्रहगति, मृत्यु से जन्म तक का सफर)

एम.जे. पार्ट -१ केन्द्रिय परिक्षा पत्र कैसा होगा ?

प्रश्न -१	रिक्त स्थान भरो	गुणांक - २०
प्रश्न -२	एक शब्द मे जवाब लिखो	गुणांक - २०
प्रश्न -३	नीचे के वाक्य सही या गलत बताईये	गुणांक - २०
प्रश्न -४	जोडियाँ लगाओ	गुणांक - २०
प्रश्न -५	एक वाक्य में व्याख्या लिखो	गुणांक - २०
	कुल	गुणांक - १००

निबंध के लिये नीचे मुजब ग्रेडिंग रहेगी

१) ४० मार्क्स के उपर A+ २) ३५ मार्क्स के उपर A ३) ३० मार्क्स के उपर B+ ४) २५ मार्क्स के उपर B
५) २० मार्क्स से कम C

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
सौ. कश्मीरा विनोद लोडाया, शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद.
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com